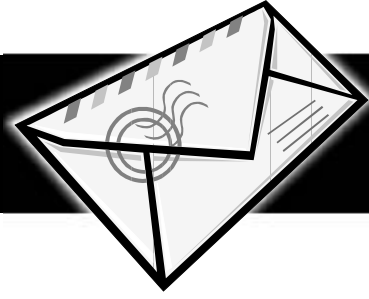


आपके पत्र



संपादक महोदय,

पहली बार आपकी पत्रिका पढ़ने का मौका मिला। हमारे डॉक्टर साहब ने पिछला अंक पढ़ने को दिया था। मैं कई वर्षों से मधुमेही हूँ व बिमारी से संबंधित साहित्य पढ़ने को उत्सुक रहता हूँ। मैंने इतनी अच्छी सामग्री इस बिमारी पर कभी नहीं पढ़ी। मुझे खेद है कि आपकी पत्रिका का प्रचार नहीं है और बिलासपुर जैसे शहर में यह किसी भी बुकस्टॉल पर उपलब्ध नहीं है। आप चाहें तो मैं इस बारे में आपकी मदद कर सकता हूँ।

— श्रीनिवास त्रिपाठी, बिलासपुर

संपादक जी,

पिछले अंक में डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी जी का 'एक गैस कांड यह भी' पढ़ कर मज़ा आ गया। वैसे गैस एक समस्या तो है। बूढ़े-जवान सभी कभी न कभी पेट में गैस और अफारे से परेशान हुए ही होंगे। डॉक्टर साहब से अनुरोध है कि मज़ाक तो हो गया अब इस बिमारी का वैज्ञानिक कारण व उपचार बतायें। हम जैसे अनेक रोगियों का भला होगा।

— जयकृष्ण सक्सेना

बी.एच.ई.एल., भोपाल



संपादक महोदय,

मैं "मधुमेह वाणी" की जितनी भी तारीफ करूँ कम होगी। वास्तव में इतनी अच्छी जानकारी इतने सलीके से डॉक्टरों द्वारा पत्रिका के माध्यम से देने का यह अनूठा प्रयोग है। संपादकीय से ही यह सिलसिला शुरू हो जाता है। मैं भी समझता था कि चार-पाँच घंटे कुछ न खाकर कभी भी फास्टिंग शुगर करवाई जा सकती है। ग्लूकोमीटर वाला लेख भी तारीफ के काबिल है। आज इसका प्रचलन आम हो गया है। फिर भी मैं समझता था सिरदर्द कौन मोल ले। यह बिल्कुल सही है कि आलस्यवश महीनों लैब जाकर शुगर चैक नहीं

करवा पाते। मेरा पुत्र एम.बी.बी.एस. का छात्र है। आपके "शोध समाचार" को काटकर संभाल कर रखता है। कहता है कि अपने गुरुजनों को प्रभावित करने में बहुत काम की सामग्री है। हमारे अपने डॉ. अजय शंकर साहब का लेख पढ़ कर मन प्रसन्न हो गया। उम्मीद है डॉ. साहब आगे भी पत्रिका में ग्वालियर का प्रतिनिधित्व करते रहेंगे।

—श्यामबाबू सिंघल
ग्वालियर

☆ ☆ ☆

संपादकजी,

मधुमेह वाणी से जानकारी मिली कि हम मधुमेह रोगी भी सूखे मेवे खा सकते हैं। मैं डॉ. अमिता सिंह जी का बहुत आभारी हूँ। हमारे यहाँ बुजुर्ग रोज सुबह पाँच बादाम खाने को सेहत के लिये बहुत अच्छा मानते हैं। अब पता चला कि इसका वैज्ञानिक आधार भी है। ज्ञान चतुर्वेदी जी ने गैस के मरीजों का बहुत मज़ाक बनाया। लगता है उन्हें कभी गैस हुई नहीं। डॉ. पुनित विग का दाँत-मसूढ़ों पर लेख पसंद आया। हम लोग दाँतों व मसूढ़ों पर कम ही ध्यान दे पाते हैं।

—सुरेश चन्द्र पाटीदार
बाबई, होशंगाबाद

☆ ☆ ☆

संपादक महोदय,

मैं धन्यवाद देना चाहूँगा आपकी पत्रिका को और खासकर डॉ. ऋषि शुक्ला को जिन्होंने डायबिटीज और सर्जरी पर इतनी उपयोगी

जानकारी दी। मेरा स्वयं का मोतियाबिंद का ऑपरेशन होना है। मैं काफी डरा हुआ था कि डायबिटीज के कारण कहीं ऑपरेशन बिगड़ ना जाये। हमारे डॉक्टर साहब ने तो कह दिया था कि डायबिटीज के कारण खतरा रहता है। मैं गोलियों से शुगर कंट्रोल पर हूँ और आप द्वारा बताई मात्रा खालीपेट 120 और खाने के बाद 180 से नीचे ही शुगर रहती है। आप लोग ऐसी अच्छी जानकारी आगे भी देते रहें तो हजारों लोगों को फायदा होगा।

— अनवर हुसैन सिद्दकी
इलाहाबाद

☆ ☆ ☆

संपादक महोदय,

मधुमेहवाणी सही मायनों में एक पूर्ण पत्रिका है। यह मधुमेही मरीजों के परिवार के लिये एक आवश्यक चीज है। इतनी सरल भाषा में इतनी वैज्ञानिक जानकारी और साथ में व्यंग्य, कविता और चुटकुले सभी उच्च कोटि के। मैं तो इंतजार करता हूँ हर नये अंक का। मेरा सुझाव है कि हर अंक में एक मधुमेही मरीज के बिमारी के बारे में अनुभव व संस्मरण प्रकाशित करें। इसी प्रकार मधुमेह विशेषज्ञों जो मधुमेह के लिये समर्पित हैं, उनके बारे में भी एक-एक कर जानकारी दी जाये। नई खोजों के साथ यह भी बताया जाये कि ये भारत में कब तक उपलब्ध होने जा रही हैं। आपकी पत्रिका भविष्य में नई ऊँचाईयों पर पहुँचे इसी शुभकामना के साथ।

— विजय कुमार भारद्वाज
मेरठ